कैलाश नारद

करीब अस्सी साल पहले की वह दोपहर इन दिनों जैसी ही चमकीली थी। न्यूयॉर्क से लॉस एंजिल्स जाने वाली वह ट्रेन क्वीन्स के रेलवे स्टेशन पर रुकी हुई थी। एक मुसाफिर ने अपने डिब्बे से थोड़े से फासले पर, प्लेटफॉर्म पर दो चूहों को एक-दूसरे के पीछे भागते हुए देखा। उनमें से एक चूहा थोड़ा बड़ा था। दोनों ही चूहे बिस्कुट के एक टुकड़े को हथियाने में लगे थे। जैसे ही छोटा उसे अपने मुँह में दबाता, बड़ा चूहा झट से उसे छीन लेता। लेकिन छोटा चूहा भी डटा हुआ था। वह बड़े चूहे का पीछा करता और उस पर कूद जाता।

ट्रेन तो चल दी लेकिन उसमें बैठा वह मुसाफिर उन चूहों को भूल न सका। वे चूहे उसकी यादों में बने रहे। यहाँ तक कि नींद में भी उन दो चूहों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। एक रात देर तक वो सो नहीं पाया। आधी रात को ही उसने उनकी तस्वीरें बनानी शुरू कर दीं।

पेशे से चित्रकार और लेखक उस मुसाफिर का नाम था – वॉल्ट डिज़नी। तुमने यह नाम शायद सुना हो। वॉल्ट डिज़नी के ये दो चूहे पूरी दुनिया में मशहूर हुए – मिकी माउस के नाम से। डिज़नी ने इन चूहों के साथ कई फिल्में बनाईं और बच्चों के साथ बड़ों को भी खूब हँसाया।

बड़े चूहे का नाम वॉल्ट डिज़नी ने पहले मार्टिमर रखा था। लेकिन उसकी पत्नी लिलयन को यह नाम जँचा नहीं। उसने चूहे के लिए छोटा-सा नाम सुझाया – मिकी माउस। लेकिन माउस भी मिकी में खो गया। बड़े चूहे को आज तक हम इसी नाम – मिकी – से पहचानते हैं। छोटे चूहे का नाम रखा – विली।

डिज़नी ने मिकी और विली पर पहली फिल्म *प्लेन क्रेज़ी* बनाई। *गैलोपियन गाउचो* दूसरी फिल्म थी। ये दोनों फिल्में लोगों ने पसन्द नहीं कीं। तीसरी फिल्म *स्टीम बोट विली* बनी। यह पहली दो फिल्मों की तरह मूक फिल्म नहीं थी। इसमें चूहों को आपस में बोलते, गाते-धूमधड़ाके करते दिखाया गया था। इस फिल्म ने मिकी और विली को पूरे अमरीका में लोकप्रिय बना दिया। आज वॉल्ट डिज़नी का चूहों का यही व्यापार पचपन हज़ार करोड़ रुपए तक पहुँच गया है। चकमक

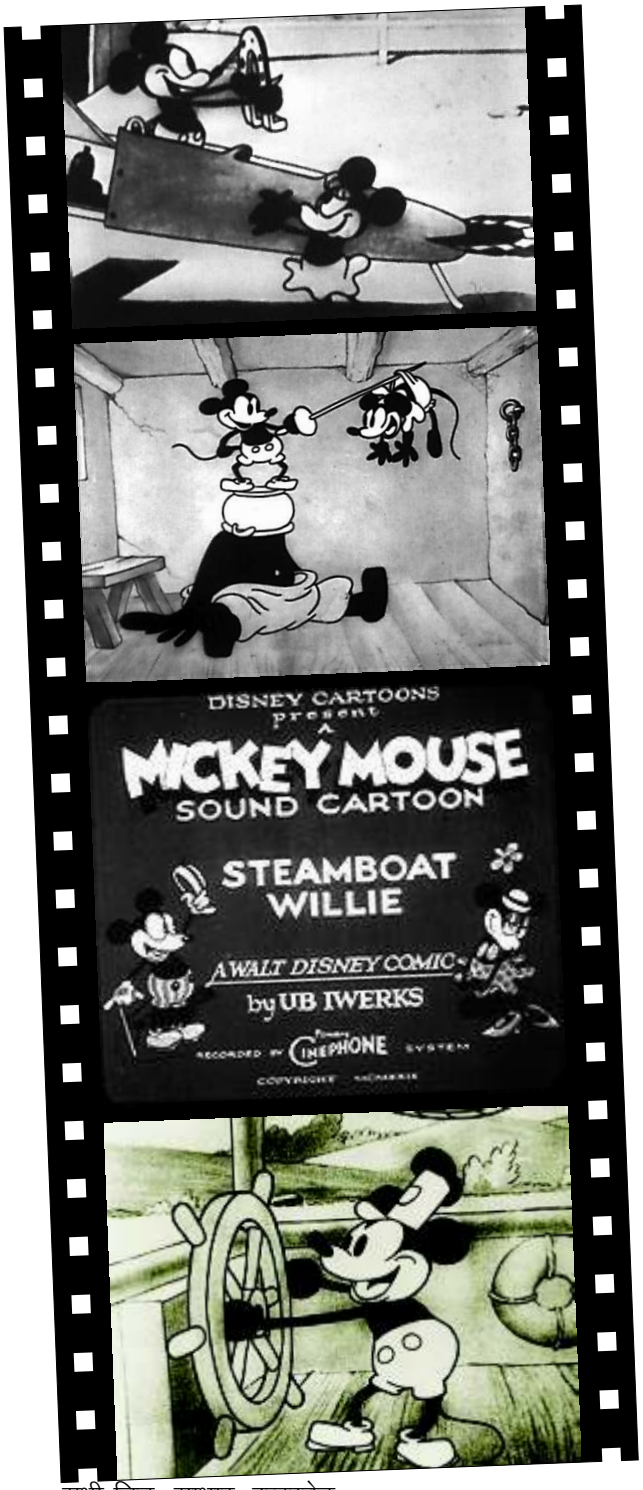

सभी चित्र- साभारः इन्टरनेट